International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

# छतरपुर फर्नीचर उद्योग में रोजगार एवं स्वरोजगार की संभावनाओं का विश्लेषण (प्राथमिक समंकों के आधार पर एक अध्ययन)

**डॉ. विद्युत प्रकाश मिश्रा**
शोध निर्देशक, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (वाणिज्य), राजभानु सिंह स्मारक महाविद्यालय, मनिकवार, जिला-रीवा (म.प्र.)
**शिवानी चौरसिया**
शोधार्थी (वाणिज्य), राजभानु सिंह स्मारक महाविद्यालय, मनिकवार, जिला-रीवा (म.प्र.)

**सारांश**
मध्य प्रदेश में स्थित छतरपुर अपने उत्कृष्ट लकड़ी के फर्नीचर के लिए प्रसिद्ध है, जो पारंपरिक शिल्प कौशल और सांस्कृतिक कलात्मकता का अनूठा संगम है। यह शिल्प सदियों पुरानी परंपरा है, जो शौर्य, सामर्थ्य और वीर भावना का प्रतीक है। लकड़ी पर की जाने वाली जटिल नक्काशी के लिए जानी जाती है। इन डिजाइनों को खूबसूरत मंदिरों से प्रेरणा मिलती है, जिनमें पुष्प, ज्यामितीय और पौराणिक आकृतियाँ प्रदर्शित होती हैं।
प्रस्तुत शोध-पत्र "छतरपुर फर्नीचर उद्योग में रोजगार एवं स्वरोजगार की संभावनाओं का विश्लेषण (प्राथमिक समंकों के आधार पर एक अध्ययन)" का उद्देश्य छतरपुर जिले के फर्नीचर उद्योग में उपलब्ध रोजगार एवं स्वरोजगार की वर्तमान स्थिति तथा भविष्य की संभावनाओं का अध्ययन करना है। अध्ययन के लिए 98 उत्तरदाताओं से प्राथमिक समंक प्रश्नावली के माध्यम से प्राप्त किए गए। अध्ययन से ज्ञात होता है कि छतरपुर का फर्नीचर उद्योग स्थानीय स्तर पर रोजगार एवं स्वरोजगार उपलब्ध कराने की क्षमता रखता है। हालांकि, वर्तमान समय में तकनीकी सीमाएँ, पूंजी की कमी, आधुनिक मशीनरी की लागत, प्रशिक्षण के सीमित अवसर, बाजार की सीमित पहुँच तथा प्रतिस्पर्धात्मक दबाव रोजगार के विस्तार में बाधक हैं।
98 उत्तरदाताओं से प्राप्त प्राथमिक समंकों के आधार पर रोजगार एवं स्वरोजगार की पर्याप्तता का परीक्षण किया गया। काई-वर्ग परीक्षण में परिकलित मान 6.90 तथा 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर सारणीबद्ध मान 3.841 प्राप्त हुआ। चूँकि परिकलित काई-वर्ग मान सारणीबद्ध मान से अधिक है, इसलिए शून्य परिकल्पना को अस्वीकार किया गया।
अतः अध्ययन का निष्कर्ष है कि छतरपुर फर्नीचर उद्योग में रोजगार एवं स्वरोजगार की महत्वपूर्ण संभावनाएँ विद्यमान हैं**,** किंतु उनके प्रभावी उपयोग के लिए आधुनिक तकनीकी प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता, कौशल विकास, डिजाइन नवाचार, डिजिटल विपणन तथा बाजार विस्तार की आवश्यकता है। इन उपायों के माध्यम से फर्नीचर उद्योग को स्थानीय रोजगार एवं स्वरोजगार सृजन का अधिक प्रभावी माध्यम बनाया जा सकता है।
**शब्दकुंजी-** फर्नीचर उद्योग, रोजगार, स्वरोजगार, छतरपुर जिला, प्राथमिक समंक, काई-वर्ग परीक्षण, कौशल विकास, फर्नीचर कारीगर, स्थानीय रोजगार, युवा उद्यमिता।

## 1. प्रस्तावना

फर्नीचर उद्योग स्थानीय अर्थव्यवस्था की उन उत्पादन एवं सेवा गतिविधियों में सम्मिलित है, जो वस्तुओं के निर्माण के साथ-साथ प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार, स्वरोजगार और आजीविका के अवसरों का निर्माण करती हैं। फर्नीचर का निर्माण केवल लकड़ी को आकार देने तक सीमित नहीं है, अपितु इसमें लकड़ी की कटाई एवं प्रसंस्करण, डिजाइन एवं माप निर्धारण, नक्काशी, मशीन संचालन, जोड़ाई, पॉलिश एवं फिनिशिंग,

फिटिंग, परिवहन, बिक्री तथा मरम्मत जैसी अनेक गतिविधियाँ शामिल होती हैं। इस प्रकार फर्नीचर उद्योग अपने साथ अनेक प्रकार के कौशल एवं श्रम को जोड़ता है। राष्ट्रीय स्तर पर भी फर्नीचर एवं फर्निशिंग क्षेत्र के लिए बढ़ई, फर्नीचर निर्माता, मॉड्यूलर फर्नीचर फिटर, फर्नीचर डिजाइनर, फिनिशर तथा गुणवत्ता परीक्षक जैसे विभिन्न व्यावसायिक कौशलों को औपचारिक रूप से चिन्हित किया गया है। फर्नीचर उद्योग की रोजगार क्षमता का महत्व विशेष रूप से छोटे एवं स्थानीय उद्यमों के संदर्भ में बढ़ जाता है। भारत में फर्नीचर निर्माण का एक बड़ा हिस्सा छोटे एवं असंगठित उद्यमों तथा स्थानीय कार्यशालाओं से जुड़ा रहा है।

छतरपुर जिले के संदर्भ में फर्नीचर उद्योग का स्वरूप स्थानीय कारीगरी, पारंपरिक कौशल, छोटे कार्यस्थलों तथा स्थानीय बाजार की मांग से जुड़ा हुआ दिखाई देता है। इस प्रकार के उद्योगों में व्यक्ति केवल मजदूरी के माध्यम से ही नहीं, अपितु अनुभव और कौशल प्राप्त करने के बाद स्वतंत्र रूप से कार्यशाला स्थापित करके स्वरोजगार भी प्राप्त कर रहा है। वर्तमान समय में फर्नीचर उद्योग में स्वरोजगार के अवसरों का स्वरूप भी व्यापक हो रहा है। पारंपरिक बढ़ईगीरी एवं फर्नीचर निर्माण के अतिरिक्त मॉड्यूलर फर्नीचर, इंटीरियर से संबंधित कार्य, फर्नीचर फिटिंग, डिजाइनिंग, फिनिशिंग, मरम्मत तथा ऑर्डर आधारित उत्पादन जैसे कार्य छोटे उद्यमों के लिए नए अवसर उत्पन्न कर रहे हैं। डिजिटल माध्यमों और ऑनलाइन विपणन के विस्तार से स्थानीय स्तर पर निर्मित फर्नीचर को व्यापक बाजार तक पहुँचाने की संभावनाएँ भी बढ़ी हैं। परिणामस्वरूप फर्नीचर उद्योग में रोजगार की अवधारणा केवल कार्यशाला में श्रमिक के रूप में कार्य करने तक सीमित न रहकर कौशल-आधारित स्वरोजगार, सूक्ष्म उद्यमिता और स्वतंत्र व्यवसाय तक विस्तृत हो रही है।

छतरपुर जिले में इस उद्योग की रोजगार एवं स्वरोजगार क्षमता का अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि स्थानीय स्तर पर उपलब्ध पारंपरिक कौशल और श्रम को यदि आधुनिक तकनीक, प्रशिक्षण, डिजाइन नवाचार तथा बाजार की बदलती आवश्यकताओं से जोड़ा जाए, तो यह उद्योग स्थानीय युवाओं के लिए नए आर्थिक अवसर उत्पन्न कर रहा है। दूसरी ओर, पूंजी की सीमित उपलब्धता, आधुनिक मशीनरी की लागत, तकनीकी ज्ञान का अभाव, बाजार का सीमित विस्तार, कुशल श्रमिकों की उपलब्धता, उत्पादों में विविधता की कमी तथा अन्य वैकल्पिक सामग्रियों से उत्पन्न प्रतिस्पर्धा जैसी परिस्थितियाँ रोजगार विस्तार की गति को प्रभावित कर रही हैं।

इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन का मूल प्रश्न यह है कि क्या छतरपुर का फर्नीचर उद्योग स्थानीय स्तर पर रोजगार एवं स्वरोजगार का पर्याप्त माध्यम बन रहा है, अथवा इसकी संभावनाएँ वर्तमान उपलब्ध अवसरों की तुलना में अभी पर्याप्त रूप से विकसित नहीं हो पाई हैं? इसी प्रश्न के उत्तर की खोज के लिए प्राथमिक समंकों का विश्लेषण तथा काई-वर्ग परीक्षण किया गया है।

**छतरपुर के फर्नीचर की जटिल हस्तनिर्मित नक्काशी**

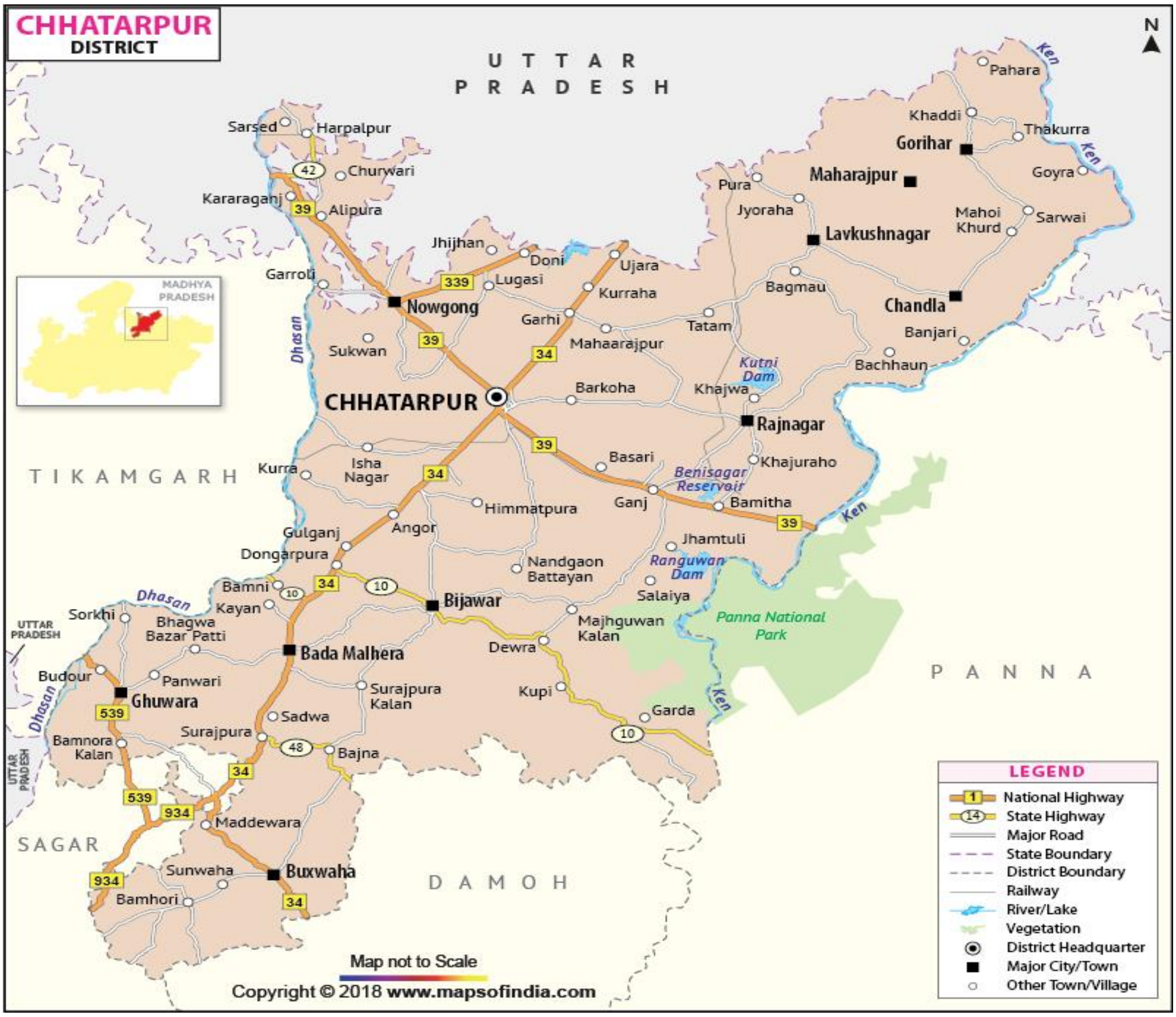


लकड़ी में आमतौर पर सागौन, शीशम, साल, आम, नीम और बबूल का उपयोग किया जाता है, जिन्हें उनकी मजबूती और सुंदरता के कारण चुना जाता है। परंपरागत लकड़ी सजावट में प्राकृतिक तेलों और मोम जैसे पर्यावरण के अनुकूल फिनिशिंग का उपयोग, जैसे टिकाऊ प्रथाओं पर जोर बढ़ रहा है।

कारीगर जटिल पैटर्न बनाने के लिए छैनी, हथौड़ा, फाइल और नक्काशी करने वाले चाकू जैसे हाथ के औजारों का उपयोग करते हैं। मॉर्डन और टेनन, डोवटेल जॉइंट और गोंद जैसे पारंपरिक जोड़ तकनीकों की जाती या पेंचदार से टूटने के लिए बिना फर्नीचर की दीर्घायु सुनिश्चित करती है।

छतरपुर का फर्नीचर अपनी जटिल हस्तिन नक्काशी के लिए प्रसिद्ध है, जिसमें सौंदर्य और आध्यात्मिकता का प्रतीक मोर, पवित्रता का प्रतीक कमल और शक्ति और राजसी ठाठ का प्रतीक हाथी और घोड़े शामिल हैं। कुछ उच्च श्रेणी के फर्नीचर में पीतल, हाथी या सीप की जड़ाई की जाती है, जो उन्हें और भी भव्य बना देती है।

उत्पादन प्रक्रिया अत्यंत सावधानीपूर्वक की जाती है, जिसमें कई चरण शामिल हैं। इसकी शुरुआत लकड़ी के चयन और सुखाने होती है, जहाँ उच्च गुणवत्ता वाली लकड़ी को टेढ़ा होने से बचाने के लिए हवा में या मशीन द्वारा सुखाया जाता है। फिर कारीगर हाथ के औजारों का उपयोग करके लकड़ी को वांछित आकार में काटा जाता है। कारीगर जटिल नक्काशी करने से पहले सीधे लकड़ी पर डिजाइन बनाते हैं। इसके बाद, पारंपरिक

जोड़ विधियों का उपयोग करके मजबूत और टिकाऊ फर्नीचर तैयार किया जाता है। फिर फर्नीचर को सैंडपेपर से चिकना किया जाता है और प्राकृतिक तेलों या वार्निश से पॉलिश किया जाता है। अंत में, गुणवत्ता निरीक्षण और पैकेजिंग से पहले पीतल की फिटिंग या सजावटी अलंकरण जोड़े जाते हैं।

फर्नीचर में कुर्सियाँ, मेजें, अलमारियाँ, नाइटस्टैंड, बिस्तर और सजावटी सामान जैसे उत्पाद के फ्रेम और शैली शामिल हैं।

**2. अध्ययन का उद्देश्य**

"छतरपुर जिले के फर्नीचर उद्योग में रोजगार एवं स्वरोजगार की वर्तमान स्थिति तथा संभावनाओं का प्राथमिक समंकों के आधार पर विश्लेषण करना।"

**3. परिकल्पना**

**शून्य परिकल्पना ($H_0$):** छतरपुर जिले का फर्नीचर उद्योग स्थानीय लोगों को पर्याप्त रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराने में सक्षम है।

**वैकल्पिक परिकल्पना ($H_1$):** छतरपुर जिले का फर्नीचर उद्योग स्थानीय लोगों को पर्याप्त रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराने में सक्षम नहीं है।

**परीक्षण का स्तर:** 5% ($\alpha = 0.05$)

**4. शोध पद्धति**

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। इसमें प्राथमिक समंकों के आधार पर छतरपुर फर्नीचर उद्योग की रोजगार एवं स्वरोजगार क्षमता का अध्ययन किया गया है। प्राथमिक समंक उत्तरदाताओं से प्रश्नावली के माध्यम से प्रत्यक्ष रूप से प्राप्त किए गए। इस शोध-पत्र के लिए कुल **98 उत्तरदाताओं** को अध्ययन का आधार माना गया है। प्राप्त प्रतिक्रियाओं को आवृत्ति एवं प्रतिशत के रूप में प्रस्तुत किया गया है तथा परिकल्पना के परीक्षण के लिए **काई-वर्ग ($\chi^2$) परीक्षण** का प्रयोग किया गया है।

काई-वर्ग का सूत्र:

$$x^2 = \sum \frac{(O - E)^2}{E}$$

जहाँ—

- O = प्राप्त/देखी गई आवृत्ति (Observed Frequency)
- E = अपेक्षित आवृत्ति (Expected Frequency)

**5. विश्लेषण एवं व्याख्या**

**तालिका 1**
**उत्तरदाताओं की जनसांख्यिकीय एवं सामाजिक-आर्थिक प्रोफ़ाइल**

| जनसांख्यिकीय चर | वर्गीकरण | आवृत्ति (संख्या) | प्रतिशत (%) |
|---|---|---|---|
| **उत्तरदाता का वर्ग** | फर्नीचर कारीगर | 43 | 43.88% |
| | फर्नीचर व्यापारी | 20 | 20.41% |
| | फर्नीचर विक्रेता | 15 | 15.31% |
| | फर्नीचर उपभोक्ता | 20 | 20.40% |
| | **योग** | **98** | **100.00%** |
| **आयु** | 18–25 वर्ष | 16 | 16.33% |

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

| | | | |
|---|---|---|---|
| | 26–35 वर्ष | 28 | 28.57% |
| | 36–45 वर्ष | 27 | 27.55% |
| | 46–60 वर्ष | 19 | 19.39% |
| | 60 वर्ष से अधिक | 8 | 8.16% |
| | **योग** | **98** | **100.00%** |
| **लिंग** | पुरुष | 82 | 83.67% |
| | महिला | 16 | 16.33% |
| | **योग** | **98** | **100.00%** |
| **शैक्षणिक योग्यता** | प्राथमिक स्तर | 12 | 12.24% |
| | माध्यमिक स्तर | 26 | 26.53% |
| | स्नातक | 32 | 32.65% |
| | स्नातकोत्तर एवं उससे अधिक | 28 | 28.58% |
| | **योग** | **98** | **100.00%** |
| **मासिक आय** | ₹10,000 से कम | 15 | 15.31% |
| | ₹10,000–₹25,000 | 31 | 31.63% |
| | ₹25,000–₹50,000 | 28 | 28.57% |
| | ₹50,000–₹1,00,000 | 16 | 16.33% |
| | ₹1,00,000 से अधिक | 8 | 8.16% |
| | **योग** | **98** | **100.00%** |

**स्रोत:** प्राथमिक समंक।

उपरोक्त तालिका से 98 उत्तरदाताओं की सामाजिक-आर्थिक एवं जनसांख्यिकीय स्थिति स्पष्ट होती है। उत्तरदाता वर्ग में फर्नीचर कारीगरों की संख्या सर्वाधिक 43 (43.88%) है, जबकि व्यापारी 20 (20.41%), उपभोक्ता 20 (20.40%) तथा विक्रेता 15 (15.31%) हैं। इससे अध्ययन में फर्नीचर उद्योग से प्रत्यक्ष रूप से जुड़े कारीगरों का पर्याप्त प्रतिनिधित्व दिखाई देता है।

आयु के आधार पर 26–35 वर्ष के उत्तरदाता 28 (28.57%) सर्वाधिक हैं, जिसके बाद 36–45 वर्ष के 27 (27.55%) उत्तरदाता हैं। लिंग के आधार पर पुरुष उत्तरदाताओं की संख्या 82 (83.67%) तथा महिलाओं की संख्या 16 (16.33%) है। शैक्षणिक योग्यता में स्नातक उत्तरदाता 32 (32.65%) सर्वाधिक हैं। मासिक आय के संदर्भ में ₹10,000–₹25,000 आय वर्ग के उत्तरदाता 31 (31.63%) सर्वाधिक हैं, जबकि ₹1,00,000 से अधिक आय वाले केवल 8 (8.16%) उत्तरदाता हैं। इस प्रकार नमूने में मुख्यतः कार्यशील आयु वर्ग, पुरुष उत्तरदाता तथा निम्न-मध्यम एवं मध्यम आय वर्ग का प्रतिनिधित्व अधिक दिखाई देता है।

**तालिका 2**

**रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसरों के संबंध में उत्तरदाताओं की राय**

| प्रतिक्रिया | उत्तरदाताओं की संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|
| हाँ | 36 | 36.73% |
| नहीं | 62 | 63.27% |

| **कुल** | **98** | **100.00%** |
|---|---|---|

**स्रोत:** प्राथमिक समंक।

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि 98 उत्तरदाताओं में से **36 (36.73%)** उत्तरदाताओं का मत है कि छतरपुर का फर्नीचर उद्योग स्थानीय लोगों को पर्याप्त रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसर प्रदान कर रहा है। इसके विपरीत **62 (63.27%)** उत्तरदाताओं ने माना कि उद्योग वर्तमान में पर्याप्त रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसर प्रदान करने में सक्षम नहीं है। इससे यह स्पष्ट होता है कि उद्योग में रोजगार की संभावनाएँ होते हुए भी वर्तमान रोजगार क्षमता को पर्याप्त नहीं माना जा रहा है।

**6. काई-वर्ग द्वारा परिकल्पना का परीक्षण**

**तालिका 3**

**काई-वर्ग परीक्षण हेतु देखी गई एवं अपेक्षित आवृत्ति**

| प्रतिक्रिया | देखी गई आवृत्ति (O) | अपेक्षित आवृत्ति (E) | O-E | $(O-E)^2/E$ |
|---|---|---|---|---|
| हाँ | 36 | 49 | -13 | 3.45 |
| नहीं | 62 | 49 | +13 | 3.45 |
| **कुल** | **98** | **98** | — | **6.90** |

**तालिका 4**

**निर्णय**

| मान | परिणाम |
|---|---|
| परिकलित $\chi^2$ | **6.90** |
| सारणीबद्ध $\chi^2$ | **3.841** |
| df | **1** |
| सार्थकता स्तर | **5%** |

**चूँकि:**

$6.90 > 3.841$

अतः शून्य परिकल्पना ($H_0$) अस्वीकार की जाती है तथा वैकल्पिक परिकल्पना ($H_1$) स्वीकार की जाती है। काई-वर्ग परीक्षण से प्राप्त परिणाम के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि उत्तरदाताओं की प्रतिक्रियाओं में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर है। अधिकांश उत्तरदाता यह मानते हैं कि छतरपुर का फर्नीचर उद्योग वर्तमान में स्थानीय लोगों को पर्याप्त रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराने में सक्षम नहीं है।

अतः इस अध्ययन में वैकल्पिक परिकल्पना—

"छतरपुर जिले का फर्नीचर उद्योग स्थानीय लोगों को पर्याप्त रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराने में सक्षम नहीं है।"

स्वीकार की जाती है।

इस परिणाम का अर्थ यह नहीं है कि उद्योग में रोजगार की कोई संभावना नहीं है। अपितु इसका अर्थ यह है कि वर्तमान औद्योगिक संरचना और उपलब्ध अवसरों की तुलना में रोजगार की क्षमता अभी पर्याप्त स्तर तक विकसित नहीं हुई है।

**7. सुझाव**

1. युवाओं के लिए फर्नीचर निर्माण एवं आधुनिक मशीन संचालन का कौशल प्रशिक्षण प्रारंभ किया जाना चाहिए।
2. छोटे फर्नीचर उद्यमियों को आसान ऋण एवं वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई जानी चाहिए।
3. स्थानीय कारीगरों को आधुनिक डिजाइन एवं तकनीक से जोड़ा जाना चाहिए।
4. महिलाओं को फर्नीचर से संबंधित सहायक गतिविधियों में प्रशिक्षण देकर स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जा सकते हैं।
5. स्थानीय फर्नीचर उत्पादों की ऑनलाइन बिक्री को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
6. छोटे कारीगरों एवं उद्यमियों के लिए सामूहिक उत्पादन एवं विपणन व्यवस्था विकसित की जा सकती है।
7. उद्योग के विस्तार के साथ नए रोजगार अवसरों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

**8. उपसंहार**

प्रस्तुत अध्ययन "छतरपुर फर्नीचर उद्योग में रोजगार एवं स्वरोजगार की संभावनाओं का विश्लेषण (प्राथमिक समंकों के आधार पर एक अध्ययन)" के माध्यम से छतरपुर जिले के फर्नीचर उद्योग में उपलब्ध रोजगार एवं स्वरोजगार की संभावनाओं को समझने का प्रयास किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि फर्नीचर उद्योग स्थानीय स्तर पर रोजगार उपलब्ध कराने के साथ-साथ स्वरोजगार के अवसर उत्पन्न करने की क्षमता रखता है। कारीगरी, मशीन संचालन, नक्काशी, पॉलिश, फिनिशिंग, मरम्मत, डिजाइनिंग, बिक्री एवं परिवहन जैसी गतिविधियाँ विभिन्न प्रकार के रोजगार अवसरों से जुड़ी हुई हैं। विशेष रूप से युवाओं के लिए कौशल आधारित स्वरोजगार तथा छोटी फर्नीचर इकाई स्थापित करने की संभावनाएँ महत्वपूर्ण हैं।

प्राथमिक समंकों के आधार पर यह भी स्पष्ट होता है कि उद्योग की वर्तमान रोजगार क्षमता अभी पर्याप्त स्तर तक विकसित नहीं हो पाई है। आधुनिक तकनीक का सीमित उपयोग, पूंजी की कमी, प्रशिक्षण के अवसरों का अभाव, बाजार की सीमित पहुँच तथा प्रतिस्पर्धात्मक दबाव जैसी परिस्थितियाँ रोजगार एवं स्वरोजगार के विस्तार को प्रभावित करती हैं। अतः केवल उद्योग की वर्तमान स्थिति का विस्तार करना पर्याप्त नहीं होगा, अपितु उसे कौशल, तकनीक, वित्त और बाजार से जोड़ना आवश्यक है।

अध्ययन में रोजगार एवं स्वरोजगार की स्थिति से संबंधित परिकल्पना का काई-वर्ग परीक्षण द्वारा परीक्षण किया गया। प्राप्त परिणामों के आधार पर उत्तरदाताओं की प्रतिक्रियाओं में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर पाया गया, जिससे स्पष्ट होता है कि वर्तमान समय में छतरपुर का फर्नीचर उद्योग अपनी संभावित क्षमता की तुलना में पर्याप्त रोजगार उपलब्ध कराने की स्थिति में नहीं है।

अतः निष्कर्ष है कि छतरपुर का फर्नीचर उद्योग रोजगार एवं स्वरोजगार का संभावनाशील क्षेत्र है। यदि स्थानीय कारीगरों एवं युवाओं को आधुनिक फर्नीचर निर्माण, मशीन संचालन, डिजाइनिंग और विपणन का प्रशिक्षण दिया जाए तथा छोटे उद्यमों को वित्तीय एवं तकनीकी सहायता उपलब्ध कराई जाए, तो यह उद्योग स्थानीय रोजगार सृजन और स्वरोजगार को बढ़ावा देने में अधिक प्रभावी भूमिका निभा सकता है। इस प्रकार फर्नीचर उद्योग को पारंपरिक व्यवसाय से आगे बढ़ाकर कौशल-आधारित स्थानीय उद्यमिता एवं रोजगार के सशक्त माध्यम के रूप में विकसित किया जा सकता है।

**संदर्भ**

1. भारत सरकार, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय (MSME). (2014–15). Annual Report 2014–15. नई दिल्ली: Ministry of Micro, Small and Medium Enterprises.

2. National Skill Development Corporation (NSDC). Furniture & Fittings Skill Council: National Occupational Standards. नई दिल्ली: NSDC. इसमें फर्नीचर क्षेत्र से संबंधित Carpenter–Wooden Furniture, Fitter–Modular Furniture, Furniture Maker तथा Furniture Finisher जैसे कौशल एवं व्यवसायिक मानकों का उल्लेख है।
3. National Skill Development Corporation (NSDC). Carpenter – Wooden Furniture (FFS/Q0102). Furniture & Fittings Skill Council. यह मानक लकड़ी के फर्नीचर निर्माण से संबंधित कौशल, प्रशिक्षण तथा रोजगार-उन्मुख दक्षताओं को रेखांकित करता है।
4. National Skill Development Corporation (NSDC). Fitter – Modular Furniture (FFS/Q5702). Furniture & Fittings Skill Council. यह मॉड्यूलर फर्नीचर के फिटिंग एवं संबंधित कौशलों से जुड़ा व्यावसायिक मानक है।
5. National Skill Development Corporation (NSDC). Qualification Pack–National Occupational Standards Booklet. Furniture & Fittings Skill Council. इसमें Carpenter, Assistant Carpenter, Master Carpenter, Interior Designer, Furniture Business Development तथा Wooden Furniture Maker जैसे रोजगार एवं कौशल क्षेत्रों का विवरण उपलब्ध है।
6. जिला प्रशासन, छतरपुर, मध्य प्रदेश. Economy – District Chhatarpur. इसमें छतरपुर की आर्थिक संरचना, स्थानीय उद्योगों तथा Wooden Furniture को जिले के One District One Product (ODOP) से संबंधित गतिविधि के रूप में प्रस्तुत किया गया है।
7. प्राथमिक समंक। (2026). छतरपुर जिले के फर्नीचर उद्योग से संबंधित 98 उत्तरदाताओं से प्रश्नावली द्वारा प्राप्त प्राथमिक जानकारी। अप्रकाशित प्राथमिक सर्वेक्षण।
8. प्राथमिक साक्षात्कार। (2026). छतरपुर जिले के फर्नीचर कारीगरों, व्यापारियों एवं विक्रेताओं से प्राप्त साक्षात्कार संबंधी जानकारी। अप्रकाशित प्राथमिक स्रोत।

**वेबसाइट संदर्भ**

- जिला छतरपुर, मध्य प्रदेश सरकार: छतरपुर की अर्थव्यवस्था एवं Wooden Furniture/ODOP संबंधी जानकारी। District Chhatarpur – Economy
- National Skill Development Corporation: Furniture & Fittings Skill Council के National Occupational Standards। NSDC – Furniture & Fittings Skill Council
- NSDC: Carpenter – Wooden Furniture, FFS/Q0102। NSDC – Carpenter Wooden Furniture
- NSDC: Fitter – Modular Furniture, FFS/Q5702। NSDC – Fitter Modular Furniture